

BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034 SUBJECT - SANSKRIT

अशुद्धि-संशोधनम् वचन-लिङ्ग-पुरुष-लकार-दृष्ट्या अशुद्धि-संशोधनम् विम्तिति ताक्यों का च्यात स पहिर 7 342/24 1) अहं दुग्धं पिवाते ચુટુ (क्रिया कर्तानुसार पुरुष-अनुसार न) 1) उन्हें दुग्धां पिवामि त्रिया कर्ता व पुरुषानुसार 2) जालका; उखान क्रीडाती। (किया करता के त्यन के अनुसार नहीं है) लालका: उत्यान की डान्त 각 राम्रिया कर्ता के वचनानुसार है) 3) rà 110 401+1 (किया करती के पुरुष के अनुसार नहीं है) 3) त्वं पाउँ पठरिन (क्रिया कर्ता के पुरुष के अनुसार है) ५) हय; अहं भूमणाय गच्हामि (किया दय: (बीता हुआ कल) के अनुसार 4) ह्य: अहं समजाय अग्राद्धम्) (किया हयः के अनसार लड्लकार लवगरानुसार नहीं 5) अहं कलमात् लिखामि अहं कलमेन लिखामि 5) ('कलम'से' अतः सही विभावत का कलम से- अतः तृतीया विभावत प्रयोग नहीं हुआ) प्रयोग हुआ है सीता रामस्य सह समाती सीता रामेण सह भ्रमाते ((ंसह पढ के योग में तृतीया विन्टउपपद) (सह पद के योग में उपपद विभावत प्रयुक्त नहीं हुई) वित्रीदेत प्रयुद्धत हुई है) 7) Ru; ch-21) 4317 7) 241 4-21 46/7 (संरत्या व संज्ञा का लिंग, वचन, (सरव्या - रमेजा का लिंग , तचन , विभावेत विर्भार्म्त समान नहीं है) समात ٤) 8) उखाने वृक्षम अस्ति। 8) उट्यान वृक्षाः आरत्ता (पढ का किंग मलत ह) (पद का लिंग सही है। a) मुखम किंप्र: तत्र गच्छाती 1) Ha: idy! it needd (विशेषण - विशेषय का लिण, वन्यत, (विशेषण विशेषय का लिंग, वन्यत. विभनित समाज नहीं है) विभक्ति समात है) 10 सः उम्ह्यापिका आस्ति 10 सा अध्यापिका अस्ति (सर्वनाम - संज्या समात है) (सर्वनाम - सन्ता स्मान नहीं है)

-1-	dr	रव][
अभ्यारेन			
1) अहं पुस्तक पठाम:	पठामि	पठातः	पठामः
2) त्वं किं करोग्रि ?	करोमि	करोखि	करेग्री
3) वृक्षात् फलाः पतन्ति।	भूलानि	मालानाम्	फाली:
4) समधा कन्युकेन क्रीडि०यथा	कीडिएयन्ति	कीडिल्पतः	कीडिण्याते
1) all man; yearst stard 1	CI Imali	जात्मेरे:	Climith:
6) इमी वालको अमन्ति ।	माते	मामतः	म्मावः
7) त्रहचा मीता न्य पञ्चतादन उन्तिष्ठयः।	उत्तिष्ठतः	3F2086-7	उतिष्ठति
8) यूय कुत्र गन्दिनित्र	गन्द्धः	रीन्द्य	JIZEN
9) स्मानिकाः देशस्य र्झान्ते ।	देशस्य	Saury	देंग्रम्
10) तो लते पततः	C 9	ताः	तानि
1) नियाते: <u>मित्रं</u> मलं यच्हाते	मित्रे	মিগায	मित्राणि
12) नृपः प्रजायाः र्झाते (प्रजया	प्रजायाम्	म्राह्स
13) जात्मकान् पठनं रान्यते (वालमाप्	बालको	वालकेम्यः
14) उसटे ह्यां न आमिएयामि	311281	मुउनारहर	35728:
1) रव: यूय भ्रमणाय उम्रान्धत	मगण्यन्ति	गमिठ्ययं	जमिठयथः
16) भूल्लुक: वृक्षण अवतराती	वृक्षात्	वृदाम	वृद्ध-य
17) त्वं नगरेण गामं कदा गामिण्यारा ?	नगर	न्धारात्	नगरम
18) ते कल्या: गीतं गायनि !	तानि	211	HI:
18) होरतम् वृक्षाः उखाने भोभन्ते । 19) सानवः पार्दां न्यलाति (हरिताति	र्हारते	हुरिता:
20) मानतः पार्या न्यताते 21) द्वात्राः संख्यापिकायं नमन्ति 21) द्वा फले मध्युरे रन्तः 21) द्वा फले मध्युरे रन्तः	पादाद्यास्		परिन
20) मानवः पाया 21) द्वात्राः अख्यापिकार्यं नमन्ति (21) द्वी फले मध्युरे रन्तः (21) द्वी फले मध्युरे रन्तः (अच्याचिका		अध्यापिका
22) द्वी फल मध्युर रन्तः।	र्वास्यास्	द्वयोः	N
23) तानि फल प्रवानि सन्ति /	पाले	hould	मलम्
23) तानि फल प्रतान सोन्ते / 24) सुरेश; अख रस पिखांस /	पिताती	विबरिन	पिलन्ति
2) वासुः प्रत्यहास्य सह कीडाते।	त्रद्धम्प	मत्यसण	प्रत्यकाय
			· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

-1-

-

शिशुलालनम् T-47 Learning outcomes (Tatator Tot-3) द्वारा माता - पिता का हमारे जीवन में महत्व बताना शीराम के बच्चों के लिस माता-पिता प्राण की तरह होते हैं - यह तथ्य समझाना माता - पिता के प्रेम व समय पर ही बच्चों के जीवन का निर्माण 61-11 अथवा पुरुष के द्वारा कदापि आत्मकेंट्रित न होता र-गी 0-1122121 -(सिंहासनस्यः रामः । ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गी तापसौ कुशलवौ) चियूछके न + उपदिश्यमान - मार्गी विदूषकः — इत इत आर्यी! - (रामम् उपसृत्य प्रणम्य च) अपि कुशलं महाराजस्य? कुशलवौ - युष्मद्दर्शनात् कुशलमिव। भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम् एव, न पुनरतियिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य। रामः ya: + 317/21 --(परिष्वज्य) अहो हृदयग्राही स्पर्शः । (आसनार्धमुपवेशयति) - ३४१२४८११ में + उपविशयति - राजासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम्। राजो + अगरन्तं , रात्नु + स्तत् , युक्तम् + अध्यासितु - उभौ - सव्यवधानं न चारित्रलोपाय। तस्मादङ्क-व्यवहितमव्यास्यतां सिंहासनम्। तस्मात् + अद्भुः - ०म्वहितम् + अख्यार्य्यते। रामः (अङ्गमुपवेशयति) अङ्ग्रम् + उपवेशयति - (अनिच्छां नाटयतः) राजन्! अलमतिदाक्षिण्येन। अल्मभ् + आतिदामिण्येन उभौ अलमतिशालीनतया । — रामः (राम सिंहासन पर स्थित हैं। तब विदूधक के द्वारा मार्ग दिखार रमत्तार्थ -तपरवी कुश-लव प्रवेश करते जाते दुर आधी दबर से इखर से ! विद्र्यम क्शा-लव - (राम के पास जाकर और प्रणाम करके) क्या महाराज केशलता आपके दर्जन से कुंशल जैसा हूँ। क्या आप दोनों के कुंशलता 115 प्रदेन की दी में यहां पात्र हूँ ी फिर अतिथिजन के मले का (मोन्चित्य) नहीं हैं। (गते लगाकर) आह! मन को दुलेने वाला स्पर्श है। (आव्ये सिंहासन पर विठा तेते हैं)

दोनों - निष्न्यय ही यह राजा का सिंहासन है, यहाँ (हमारा) जैठना उचित JE1 21 राम - रुकावट के साथ आन्यरण करता न्यरित के लोप का कारण जहीं होता तो हृदय (जाव) के समीप होते के कारण सिंहमात पर बैठों। (गोंद में बिठाते हैं) वोगें - (अग्रिन्दा को प्रबट करते हैं) महाराज अव्यक उदारता न करें/ राम - लहुत आव्यक मिठ्ता न करें अभ्यास - I • स्कापदेन उत्तरत 1) सिंहासूने क; स्थ; ? ॥) कुशलवी करूथ समीपम् अगच्हताम् ? 11 , पूर्णवाक्येन उत्तरत 1) क्योः स्पूर्वाः रामाय हृदयग्राही आसीत् ? 11) राम; को अट्र-मुप्रवेशयाते ? 1) उन्तर 'उभी' पढं का भ्यां अयुक्तम् ? (क) लवकुशाभ्याम् (ख) विद्रुषक रामाभ्याम् 1) 'प्रविधात' पढरन्य कर्तृपदं किमस्ति ? (क) विद्रुषक रामो एखालवकुशो (ग) रामकुशो 11) 'प्रविधात' पढरन्य पर्याथयदं किम् ? का जासनार्व्यम् (ख) वयम् (ग) माजनम् 11) 'पात्रम् 'पढरन्य पर्याथयदं किम् ? का जासनार्व्यम् (ख) वयम् (ग) माजनम् 111 . साचिक - कार्यम 10) स्पर्धाः पटस्य विज्ञायणपदं विम् कि परिष्वन्य (क) ह्रयमाहीला मवती; Inta (1) भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद् त्राः + अनुराध्यादः अनुराध्यात् गुठा लालनीय: + स्व गुणमहतामपि लालनीय एव। हिमत्तर: + अपि , व्रजति हिमकरोऽपि वालभावात् अर्थ- वच्चा अपनी आयु के कारण से गुणों से महान लोगों के (में) भी लालन के योग्य ही होता है। चंद्रमा भी वालभाव की सुंदरता के कारण से शिवजी के मस्तक के केतकी के पुष्पों से बने जुड़े का रूप धारण कर लेता है। उन्विय' जित्राजनः वयः अनुरोचात् गुणमहताम् अपि लालनीयः एव ्भवातेगी दिसकर, अपि जालभाषात् पशुपाते सरतक केतकच्छत्वम् skill 1 अग्रयास: - - . श्क्रपदेन उत्तरत (1) कः लालनीयः अवाते ? (11) कः जानभावात् पशुपति-मस्तके विराजते? ा प्रावाक्येन उतरत हिमकर: किमिव पद्यापति-मस्तके विराजते?

3 111 . माचिक- कार्यम (1) 'झजाते 'क्रियापदस्य कर्त्यदं न्यिज्ञत । (क) विद्याजनः (ख) हिमकरः (11) पद्यपतिः (1) वाज्ञी' पदस्य पर्यायपदं किमस्ति? (क) स्मिकर् (क) पद्यपति :(ग) केतकव्हत्व (111) दिनकर: पदर-य विपर्ययपदं चिन्त ! (क) पत्रावाती: (ख) लॉलनीय: (ग) स्मिकर: A122121 - 2 1 रामः – एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतूहलेन पृष्ठामि-क्षत्रियकुल-पितामहयोः सुर्यभ्रन्द्रयोः को वा भवतोर्वशस्य कर्ता? भगवनु सहस्रदीधितिः) -> (11/11 2 लवः Jan; + dall-2 कथमरमत्तमानाभिजनी संवृत्ती? कथाम् १ अन्मत् नामान + आंभतनी रामः - किं दयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्? हुरा : + आंध + एके भ + १९ विदूषकः 416142 - भातरावावां सीदयीं। आतेरी + आता लवः समरूपः शरीरसन्निवेशः । वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम् । 🖽 🐴 🧃 वर्डि वत् + अन्तरभ् रामः - आवां (यमलौं ।) युगलिं। लवः सम्प्रति युञ्यते । किं नामचेयमु? रामः आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि (कुर्श निर्दिश्य) आर्योऽपि गुरुवरणवन्दनायाम् लवः 31126 + 3114 MAINTER + GIE - अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि। कुशः सरलाः यह आप केनें के सींदर्य को देखने से उत्पन्न कौतूहल (उत्युक्त) ATH. - सनिय कुल के पितामट् सूर्य अधवा चाँद में 1631 आपके तंरा के कर्ता (पूर्वज) है स्रयं HIPICIC add तेलों स्व समात कुल में पैक होने वाले हा गर है। 24 117 3-12 2) - El Rah dul d-211 सगे भाई हैं हम दोनों ad वनाक एक जैसी है। आयु का भी कुछ अंतर नहीं है। al 2122 ZTH वोनों जडतें है EH Md Sta Et 31 क्या नाम HO राम al तंदना में लव इस प्रकार स्वयं को सुनाता सार्य Ma की ओर इक्रारा करके) आर्य भी गुरु की चरन तंदनामें (21 'कुरा' उस प्रकार स्वयं को सुनाता

उभन्न्यास - I स्कपदेन उत्तरत 1) क्वत्रियकुलस्य पितामरी की स्तः ? 11) लवकुशायों; वंशस्य कर्ता कः ? 1) कुशलवयों ; महये कीटृशी समानता उन्नसीत् ? 1) कुशलवयों ; महये कीटृशी समानता उन्नसीत् ? 1) रामः किमर्थ कुशलवयों ; कुलविषये अपृत्हत् ? 111 • माधिक - कार्यम 1) अत्र युगली इत्यर्थ कि पद प्रयुक्तम् (का यमली (खा मातरी (ग) सोदयी 1) रविः इत्यस्य पर्यायपदं चिन्त्त (का सरस्त्रदीचितिः (ख) सूर्यचन्द्रयाः / रवि; दत्यस्य पर्यायपदं चिन्तने (सीन्दर्यातलाक्तजानतेन कोतूहलेन अनयाः पद्याः विशेषणपदं किमस्ति] अग्यस्य वन्दनायाम् --- अत्र आयस्य (क) रामाय (ख)लवाय (ग) केशाय पढ करनी प्रयुक्तम् पाठ को विस्तारपूर्वक समझने के लिए देखें-You tube link - https://youtu.be/7QhOFJGVcOw 3000